❋ 24 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बच्चों को वन्डर लगता कि हम क्या थे, किसके बच्चे थे, ऐसे बाप को हमें वर्सा मिला था, उस बाप को ही हम भूल गये। रावण आया इतनी फागी आ गई जो रचयिता और रचना सब भूल गया। बाप को बच्चों पर वन्डर लगता, जिन बच्चों को मैंने इतना ऊंच बनाया, राज्य-भाग्य दिया, वही बच्चे मेरी ग्लानि करने लगे। रावण के संग में आकर सब कुछ गँवा दिया।

2] भगवानुवाच, मैंने तो कभी भी कहा नहीं है कि मैं सर्वव्यापी हूँ। मैंने तो राजयोग सिखाया और कहा तुमको विश्व का मालिका बनाता हूँ फिर वहाँ तो इस नॉलेज की दरकार ही नहीं रहती। मनुष्य से देवता बन जाते हैं, तुम वर्सा पा लेते हो। इसमें हठयोग आदि की बात नहीं। अपने को आत्मा समझो, अपने को शरीर क्यों समझते हो। शरीर समझने से फिर ज्ञान उठा नहीं सकते। यह भी भावी। तुम समझते हो हम रावणराज्य में थे, अब रामराज्य में जाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। अभी हम पुरूषोत्तम संगमयुग वासी हैं।

3] पुरूषार्थ ऐसा हो जो विजय माला में सा सकें।

4] नम्बरवन है काम, क्रिमिनल आई बड़ी खराब है इसलिए नाम ही है क्रिमिनल-आइज्ड़, सिविल-आइज्ड़।

5] आगे चल और भी एक्यूरेट लिखेंगे। खुद भी फील करेंगे हम तो इतना समय झूठ बोलते, गिरते आये हैं। ज्ञान पूरा बुद्धि में बैठा नहीं था। यही कारण था जो हमारी अवस्था नहीं बनी। बाप से हम छिपाते थे।

6] तुम भारतवासी बहुत ही खुशी में थे, और कोई था ही नहीं। क्रिश्चियन भी कहते हैं पैराडाइज था, चित्र भी देवताओं के हैं, उनसे कोई पुरानी चीज तो है नहीं। पुराने ते पुराने यह लक्ष्मी-नारायण होंगे या इन्हों की कोई वस्तु होगी। सबसे पुराने ते पुराना है श्रीकृष्ण। नये से नया भी श्रीकृष्ण था।

7] देह-अभिमान में आने से अपना ही नुकसान कर देंगे। पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। क्रोध, लोभ भी क्रिमिनल आई है। आंखों से चीज़ देखते हैं, तब तो लोभ होता है।

8] बाबा कहते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, जो कुछ बीता, उसको ड्रामा समझो। सोचो नहीं। कितनी मेहनत करते हैं, होता तो कुछ नहीं, ठहरता नहीं। अरे, प्रजा भी तो चाहिए ना। थोड़ा भी सुना तो वह प्रजा हो गई। प्रजा तो ढेर बननी है। ज्ञान कभी विनाश को नहीं पाता है। एक बार सुना– शिवबाबा है, तो भी बस, प्रजा में आ जायेंगे।

9] कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योगयुक्त हो। कर्मगयोगी आत्मा सदा ही कर्म और योग का साथ अर्थात् बैलेन्स रखने वाली होगी। कर्म और योग का बैलेन्स होने से हर कर्म में बाप द्वारा तो ब्लैसिंग मिलती ही है लेकिन जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उनसे भी दुआयें मिलती हैं। कोई अच्छा काम करता है तो दिल से उसके लिए दुआयें निकलती हैं कि बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा मानना ही दुआयें हैं।

10] सेकेण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने का अभ्यास ही कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा।

❋ योग-

1] अब फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना चाहते हो तो मुझ बाप को याद करो तो सब पाप कट जाएं।

2] तो गृहस्थ में रहते, शरीर निर्वाह लिए धन्धा आदि करते सिर्फ बाप को याद करो।

3] अन्दर में तुम्हें यह स्मृति आनी चाहिए हम जिस राज्य में थे, वह फिर से अब पा रहे हैं। उसके लिए पूरा पुरूषार्थ करना चाहिए। बिल्कुल एक्यूरेट सर्विस चल रही है।

✺ 24 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ धारणा-

1] अब शिवालय में जाने के लिए इन विकारों को निकालना है। इस वेश्यालय से दिल हटाते रहो। बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।

2] रहना भी अपने घर में है और बुद्धि से समझना है– हम शूद्र नहीं, हम ब्राह्मण हैं।

3] बाप बच्चों को समझाते हैं– अपने हो जाए तो बाकी क्या चाहिए। भल विकार में नहीं जायेंगे परन्तु कुछ न कुछ आंखे धोखा देती रहती हैं।

4] सर्जन से 5 विकारों की बिमारी छिपानी नहीं हैं, सच बताना चाहिए– हमारी बुद्धि इस तरफ जाती है, शिवबाबा तरफ नहीं जाती। बताते नहीं हैं तो वह वृद्धि को पाती रहती है।

5] अब बाप समझाते हैं– बच्चे, देही-अभिमानी बनो, अपने को आत्मा समझो। आत्मा भाई-भाई हो।

✺ सेवा-

1] जैसे बाम्बे में संगठन हुआ तो उसमें बतला सकते हैं कि बाप कहते हैं– हे भारत-वासियों, तुमको हमने राज्य-भाग्य दिया। तुम देवतायें हेविन में थे फिर रावण राज्य में कैसे आये, यह भी ड्रामा में पार्ट है। तुम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को समझो तब ऊंच पद पा सको।

2] बाप बिगर तो कोई समझा न सके। भगवान् इस रथ द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं, यह याद रहे तो भी बुद्धि में ज्ञान हो। फिर औरों को बताकर आपसमान भी बनायें।